* बाल्यावस्था में मानसिक विकास :—

बाल्यावस्था में मानसिक विकास की गति तीव्र होती है। इस अवस्था में बालक में सहज प्रवृत्तियाँ (Reflection activity), रोना, हँसना, चिल्लाना, पलक झपकाना होती है। मूल परिवर्तन में सिखा हुआ चीज आता है। वह अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए अपने अभिभावकों से अनेक प्रकार के प्रश्न करता है। इस अवस्था में छह वर्ष का बालक दाएँ - बाएँ का ज्ञान सीख जाता है। वस्तुओं की गिनती करना, समस्या का समाधान आदि सीख जाता है। 7 वर्ष का बालक दो वस्तुओं में अंतर करना सीख जाता है। 8 वर्ष के आयु में 16 से 17 शब्द के वाक्य को पढ़ने लगता है। 9 वर्ष आयु में दिनों के नाम, समय, रुपयों का ज्ञान होता है। 5-6 तर्कात शब्द (तर्क करना) करने लगता है। 11 वर्ष की आयु में अंतर करना, पशु पक्षी आदि में भेद करना सीख जाता है।

* बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास :—

बाल्यावस्था में संवेगों की गति तीव्र पायी जाती है। बाल्यावस्था में विभिन्न संवेग पाये जाते हैं। 1) भय, 2.) चिंता, व्यग्रता (व्याकुलता) 4) क्रोध

Scanned with CamScanner

5) ईर्ष्या, 6) जिज्ञासा, 7) स्नेह, 8) प्रफुल्लता
9) निराशा, 10) आनंद, 11) उग्रता।

1) **उग्रता** :— संवेगों की उग्रता के कारण बाल्यावस्था में विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

2.) **ईर्ष्या** :— इस उम्र में लड़के-लड़कियों दोनों में ईर्ष्या की भावना देखी जाती है। सभी एक-दूसरे से चिढ़ते हैं, आरोप लगाते हैं, तिरस्कार करते हैं, निंदा करेंगे।

3) **निराशा** :— परिवार में, विद्यालय में अनुशासन होने के कारण बाल्यावस्था में निराशा की भावना होने लगती है।

* **बाल्यावस्था में सामाजिक विकास** :—

1) सामाजिक भावना :— इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में सामाजिक जागरूकता, चेतना, समाज में रुचि आदि तत्व पाए जाते हैं। सामाजिक भावना का विकास सबसे ज्यादा विद्यालय में परिवार में नए मित्र बनाने में सामाजिक कार्यों में रुचि होती है।

2) आत्मनिर्भरता :— बाल्यावस्था में बालक स्वयं को स्वतंत्र मानकर आत्मसम्मान प्राप्त करने का कार्य करता है। वे आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करते हैं। परिवार को छोड़कर बालकों के साथ खेलने, क्रियायें करने, निर्णय लेने लगते हैं।

3) किशोर ! — (समूह प्रवृत्ति)

इस अवस्था में बालक और बालि क्रियाशील एवं सक्रिय हो जाते हैं। इस अव में बालक समूह बनाकर रहना पसंद करता Ex – खेल समूह, सांस्कृतिक समूह, सेवा स चोर समूह, अपराधी समूह आदि।

4) नागरिक गुणों का विकास ! — बाल्यावस्था में बालक औ बालिकाओं में निम्न गुण पाए जाते हैं, चारित्रिक गुण, नागरिक गुण, माता-पिता सेवा, अध्यापक का सम्मान आकर्षित व्यक्तित्व आदि।

* शैशवावस्था में शारीरिक विकास को प्र करने वाले कारक : —

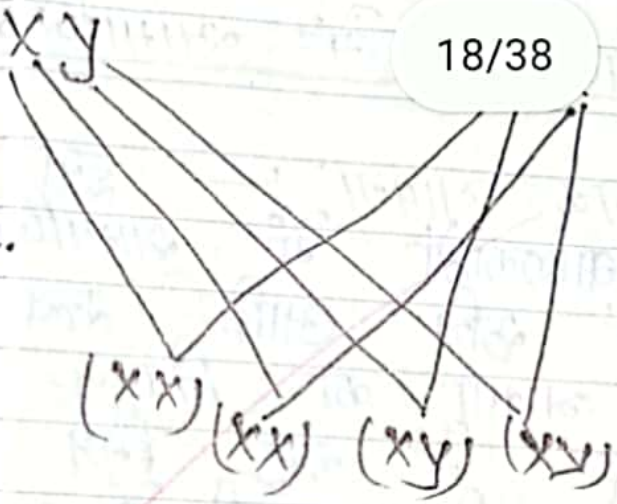

Crossing over.

Scanned with CamScanner

1) भोजन ! – संतुलित आहार पौष्टिक खाना, माँ का प्रथम दूध, शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम बनाता है।

V.I 2) परिवार की स्थिति ! → परिवार की सामाजिक स्थिति, आर्थिक - स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति। ये तीनों शारीरिक विकास को प्रभावित करते हैं।

3) दिनचर्या ! → बालक की दिनचर्या उसके शारीरिक विकास पर बहुत प्रभाव डालता है। Ex – खाना, नहाना, रहन - सहन आदि।

* किशोरावस्था में शारीरिक विकास ! –

1) भार ! – किशोरावस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक बढ़ता है। इस अवस्था के अंत में बालकों का भार बालिकाओं से लगभग 25 Pb अधिक होता है अंत में।

2) लंबाई ! → इस अवस्था में बालक और बालिकाओं दोनों का बढ़ती है। बालक की लंबाई 18 तक और उसके बाद भी बढ़ती है। बालिका अपनी अधिकतम (18-25) लंबाई पर लगभग 16 वर्ष की आयु में अधिकतम लंबाई तक पहुँच जाती है।

3) सिर और मस्तिष्क ! → इस अवस्था में सिर एवं मस्तिष्क का विकास जारी रहता है एवं 16 वर्ष की आयु में सिर का [illegible] विकास हो जाता है। मस्तिष्क का भार 1200 से लगभग 1400g के बीच होता है।

4) दाँत ! → इस अवस्था में प्रवेश करने के समय बालकों एवं बालिकाओं के लगभग सभी स्थायी दाँत निकल जाते हैं। यदि उनके प्रज्ञादन्त (wisdom teeth) (बुद्धिदाँत) निकलने प्रारंभ हो जाते है।

5) हड्डियाँ ! → इस अवस्था में अस्थिकरण की प्रक्रिया होती है। इस अवस्था में अस्थिकरण पूर्ण हो जाती है। हड्डियों में पूरी मजबूती आ जाती है।

6) अन्य अंग ! → इस अवस्था में मांसपेशियों का विकास तीव्र गति से होता है। 12 वर्ष की आयु में कुल भार का 33% होता है। 16 वर्ष की आयु में 44% होती है। दिल की धड़कन 1 min में 72 बार धड़कता है। बालकों का सीना और कंधे चौड़े हो जाते हैं। बालिकाओं में वक्षस्थल, कुल्हे चौड़े हो जाते हैं। बालकों में आवाज परिवर्तन हो जाते हैं। बालकों की आवाज कठोर तथा बालिकाओं में मधुर हो जाती है।

※ किशोरावस्था में मानसिक विकास !—

1) बुद्धि का अधिगम विकास !— किशोरावस्था (13-19) में बुद्धि का अधिकतम विकास हो पाता है। बुद्धि सीखने की प्रक्रिया है। यह विकास बुद्धि के कारण होता है।

2) मानसिक स्वतंत्रता ! → किशोरावस्था मानसिक विकास स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है। वह रुढ़िवादी का प्रतीक होता है।

3) मानसिक योग्यता ! → किशोरावस्था में मानसिक योग्यता का स्वरूप निश्चित हो जाता है। उसके अंदर सोचने, समझने, अंतर करने,

20/38
Scanned with CamScanner

* ध्यान !→ किशोरावस्था में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता अधिक होती है। वह किसी भी वस्तु पर अपना ध्यान बहुत देर तक लगा सकती है।

* चिंतन शक्ति !→ किशोरावस्था में चिंतन-शक्ति अत्यधिक पायी जाती है। इसके आधार पर किशोर विभिन्न प्रश्नों, विभिन्न समस्याओं को हल कर सकता है।

* तर्क शक्ति !→ किशोरावस्था में तर्कशक्ति अत्यधिक पायी जाती है। किशोर किसी भी बात को बिना तर्क के स्वीकार नहीं करते हैं।

* शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक !→

1) विश्राम एवं निद्रा !→ शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए विश्राम एवं निद्रा बहुत आवश्यक है। थकान को दूर करने के लिए इन तत्वों की आवश्यकता होती है। शैशवावस्था में बालक की निद्रा अत्यधिक होती है। 3 या चार वर्ष का शिशु 12 घंटे सोते हैं। बाल्यावस्था में 10 घंटे और किशोरावस्था में 8 घंटे सोते हैं।

Sunday 27

2) खेल तथा व्यायाम !→ शारीरिक विक[ास के] लिए खेल तथा व्यायाम कराने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता होती है। छोटे शिशु व्यायाम हाथ-पैरों को चलाकर करते हैं। बालक तथा किशोरावस्था में व्यायाम खुली हवा में करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

* प्रेम तथा सहानुभूति :→ माता - पिता, अध्यापक, परिवारजन तथा अन्य व्यक्ति को 'प्रेम तथा' स्नेह तथा सहानुभूति बालक के साथ व्यवहार करना चाहिए। परिणाम स्वरूप बच्चे का विकास तीव्र गति से होगा तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

* किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :→

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास तीव्र गति से होता है। इसको निम्न प्रकार से प्रदर्शित कर सकते हैं :→

1) कल्पनाशीलता :→ किशोरावस्था में अत्यधिक कल्पनाशीलता पायी जाती है। जिसके कारण दिन के सपनों में संवेगों का प्रकट होना पाया जाता है।

2.) अपराधी प्रवृत्ति :→ किशोरावस्था में अपराधी प्रवृत्ति अत्यधिक पायी जाती है। अपराधी प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति सफल व असफल दोनों हो सकता है।

3) जिज्ञासा :→ किशोरावस्था में जिज्ञासा प्रबल होती है। इसके कारण किशोर दार्शनिक, वैज्ञानिक और चिकित्सक आदि बन सकता है।

4) वीरपूजा :→ इस अवस्था में [illegible] की अधिकता के कारण किशोर एवं किशोरियों में रुचिकर कहानियाँ, उपन्यास, सिनेमा, इतिहास,

Scanned with CamScanner